Printing Area

www. विद्यावार्ता .कॉम

You Tube Channel

Vidyawarta is peer reviewed research journal. The review committee & editorial board formed/appointed by Harshwardhan Publication scrutinizes the received research papers and articles. Then the recommended papers and articles are published. The editor or publisher doesn't claim that this is UGC CARE approved journal or recommended by any university. We publish this journal for creating awareness and aptitude regarding educational research and literary criticism.

The Views expressed in the published articles,Research Papers etc. are their writers own. This Journal dose not take any libility regarding appoval/disapproval by any university, institute, academic body and others. The agreement of the Editor, Editorial Board or Publicaton is not necessary. Editors and publishers have the right to convert all texts published in Vidyavarta (e.g. CD / DVD / Video / Audio / Edited book / Abstract Etc. and other formats).

If any judicial matter occurs, the jurisdiction is limited up to Beed (Maharashtra) court only.

Indexed

IMPACT FACTOR 7.891 iijif

Govt. of India,
Trade Marks Registry
Regd. No. 3418002

http://www.printingarea.blogspot.com

Printing Area : Interdisciplinary Multilingual Refereed Journal

83 96. SGGS-Aug-2021

12

कस्तूरी कुण्डल बसै– स्त्री विमर्श के आईने से

डॉ.गोविंद गुंडप्पा शिवशेट्टे
हिंदी विभाग,
महाराष्ट्र महाविद्यालय, निलंगा, जिला लातूर

****

मैत्रेयी पुष्पा ने स्त्री विमर्श की विभिन्न आयामों को अत्यंत चिंतनपूर्वक रुप में उजागर किया है । इनकी रचनाओं का अध्ययन करे तो यह जान पडता हें कि मैत्रेयी का लेखन स्त्री स्वाधीनता का नया संविधान लिखने की दृष्टि से पहला कदम माना जा सकता है । जाननेवाले जानते है कि मैत्रेयी पुष्पा ने पहले विमर्शों को जिया है बाद में उन्हें लेखन में उतारा है । कितने रचनाकार है जो यह कर पाते है,कथनी और करनी का यह अभेद ही उनकी प्रभावी, अपार, सृजनात्मक सफलता और सुयश का कारण है । प्राचीन काल से किस तरह स्त्री पर कब्जेदारी की कुप्रथाओं तथा कुप्रवृत्तियाँ बढ़ते गई। जिस समाज ने स्त्री को श्रम करने तथा बच्चे पैदा करने की मशीन मात्र समझा उस समाज की मान्यताओं को मैत्रेयी ख़ारोज कर स्त्री के मुक्ति की दाँवेदारी मजबुत करती है ।

मैत्रेयी पुष्पा की रचनाएँ उनके जीवन के अनुभवों की एक सशक्त कडियॉ है जिसके सहारे पाठक को स्त्री के संदर्भ में सोचने के लिए बाध्य किया है । हक्क और अधिकार किसी की जागीर न होकर उस पर स्त्री–पुरुष समानाधिकार है कि मान्यताओं को मैत्रेयी पुष्पा ने रचनाक्रम में उजागर किया है । मैत्रेयी के उपन्यासों के स्त्री चरित्र धार्मिक, सामाजिक, रुढ़ि–प्रथा, परंपराओं तथा कथाकथित मान्यताओं के प्रति विद्रोह करते हैं । त्याग और समर्पण के जगह मैत्रेयी के स्त्री चरित्र हक्क और अधिकार की चर्चा करते है । मैत्रेयी की यह विचारधारा तमाम पाठकों को वैचारिक उर्जा से लेस कराती हैं । मैत्रेयी के उपन्यासों में चाक,इदन्नमम्,झूलानट,गुनाह–बेगुनाह,कही ईसूरी फाग,अगनपाखी आदि महत्वपूर्ण है ।

कस्तूरी और बेटी मैत्रेयी पुष्पा के संघर्शपील चरित्र की गाथा है 'कस्तूरी कुण्डल बसै' आत्मकथात्मक उपन्यास है । राधारमण वैद्य इस रचना के संदर्भ में लिखते है – ''यह विचित्र रचना है । आत्मकथा तो है ही उपन्यास के तत्वों से भी भरपूर है । मुख्य कथा माँ–बेटी के आपसी प्रेम, घृणा, लगाव और दुराव की अनुभूतियों से रचि गई है । इस कथा के अन्य अवयव भी है जिनसे दोनों के अन्य अनेक गुण–दोष, लगाव विवशताएँ और साहस–संघर्ष भी प्रकट होते है ।''[१] स्वयं लेखिका इसे उपन्यास कहे या आपबीती प्रश्नचिन्ह के घेरे में है । आत्मानुभूति की इमान से अभिव्यक्ति करना आत्मकथा का निर्विवाद तत्व है । आत्मकथा लिखने का मादा वहीं रखता है जो अपने सत्य का असलियत में शब्दबद्ध करना जानता है । यद्यपि हिंदी में अनेक आत्मकथाएँ आई पर लेखन में जिस नैतिक साहस की और इमानदारी की जरुरत होती है वह कही–न–कही गायब है । मैत्रेयी की यह आत्मकथा एक ऐसी रचना है जिसमें लेखन का नैतिक साहस और ईमानदारी का दर्शन होता है।

'कस्तूरी कुण्डल बसै' मैत्रेयी पुष्पा के आत्मकथा का प्रथम खण्ड है जिसमें हमें दो हिस्से दिखाई देते है ! एक माँ कस्तूरी के जीवन से संबंधित तो दूसरा मैत्रेयी के अपने जीवन से संबंधित । पहला हिस्सा कुछ देखा–सुना और कुछ अनुमानित है और दूसरा अंग मैत्रेयी का अंतरिक ऐवज है । इस संदर्भ में मैत्रेयी लिखती है – ''यह है हमारी कहानी मेरी और मेरी माँ की कहानी । आपसी, प्रेम, घृणा, लगाव और दूर की । अनुभूतियों से रचि कथा में बहुत–सी बातें है जो मेरे जनम के पहले ही घटित हो चुकी थी...। अपनी

तो स्त्री ने । या कुदरत को ही उससे बैर था । या कि सृष्टि के कर्ता–धर्ता की ही कोई साजिशकृ मादा बनाने के बाद, मादा होने की सजा का नाम औरत धर दिया ।''[८] सृष्टि के कर्ता–धर्ताओं ने क्या कम साजिश की है कि जिसमें और बढ़ोत्तरी करता है हमारा धर्म और समाज । मैत्रेयी ने माँ कस्तूरी के माध्यम से स्त्री स्वाधीनता की माँग करने लगी है – ''लाली तू तो यह बता कि देश आजाद किसने मान लिया ? औरतों की आजादी गुलाम पड़ी है । बस मर्दो का आजाद होना देश का आजाद होना है ? स्वतंत्रता संग्राम में औरतों ने लाठियाँ खाई उनकी स्वातंत्रता कब आएगी ? वे तो तुमने भी गायों की तरह लाठियों से हाक दी और खुंटों से बांध दी अब उनका रस्सा कौन खोले ?''[९] यह सच साबित हुआ की स्त्री की आजादी आना अभी षेश है । आज भी स्त्री चार दीवारों में कैद है ।

'कस्तूरी कुण्डल बसै' आत्मकथा कस्तूरी और मैत्रेयी के संघर्ष की दास्तान है जो संघर्ष करना अपना इति कर्तव्य मानती है – ''न जमीन न जल, न हवा न इज्जत, न आबरू । सब हमारे आस–पास घिरे मर्दो का है, जब चाहे बक्स दे, जब चाहे उतार दे पर हम फिर लढेंगे अपनी जान के लिए, अपनी इंद्रियों के लिए, अपने इन्सान होने के लिए ।''[१०] मैत्रेयी पुष्पा की यह रचना अत्यंत साहसिकता का परिचायक है जो स्त्री को स्त्री की अस्मिता, अपने मादा का परिचय करा देती है । पुरुष की वह बेडियाँ को तार–तार कर देती है । प्रत्येक पाठक को चाहे वह पुरुष हो चाहे स्त्री को परिवर्तन की राह दिखाता है । आलोच्य आत्मकथा कस्तूरी के स्वनिर्भर पुरुष रहित जीवनयापन को प्रस्तुत करती है । कस्तूरी मैत्रेयी को तथा तमाम स्त्री वर्ग को आत्मनिर्भरता के लिए प्रेरित करती है । माँ बेटी का आपसी प्रेम, घृणा, लगाव तथा विचारों की टकराहट को अभिव्यक्ति मिली है ।

संदर्भ ग्रंथ

१.संपा. दीक्षित दया, मैत्रेयी पुष्पा : तथ्य और सत्य, सिंह भाषा, टटोलना स्याह अंधेरे को, पृ.सं. ८६

२.संपा. दीक्षित दया, मैत्रेयी पुष्पा : तथ्य और सत्य, वैद्य राधारमण, कस्तूरी कुण्डल बसै, पृ.सं. १८२

३. पुष्पा मैत्रेयी, कस्तूरी कुण्डल बसै, पृ.सं. ०९

४. पुष्पा मैत्रेयी, कस्तूरी कुण्डल बसै, पृ.सं. १०६

५. पुष्पा मैत्रेयी, कस्तूरी कुण्डल बसै, पृ.सं. ६८

६.संपा. दीक्षित दया, मैत्रेयी पुष्पा : तथ्य और सत्य, पृ.सं. १८८

७. पुष्पा मैत्रेयी, कस्तूरी कुण्डल बसै, पृ.सं. ३०९

८. पुष्पा मैत्रेयी, कस्तूरी कुण्डल बसै, पृ.सं. २९७

९. पुष्पा मैत्रेयी, कस्तूरी कुण्डल बसै, पृ.सं. २९८

१०. पुष्पा मैत्रेयी, गुड़िया भीतर गुड़िया, निवेदन से उध्दृत

❑❑❑